ISSN : 2321-5569
राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

मधुमती

वर्ष 60, अंक 10, अक्टूबर, 2020

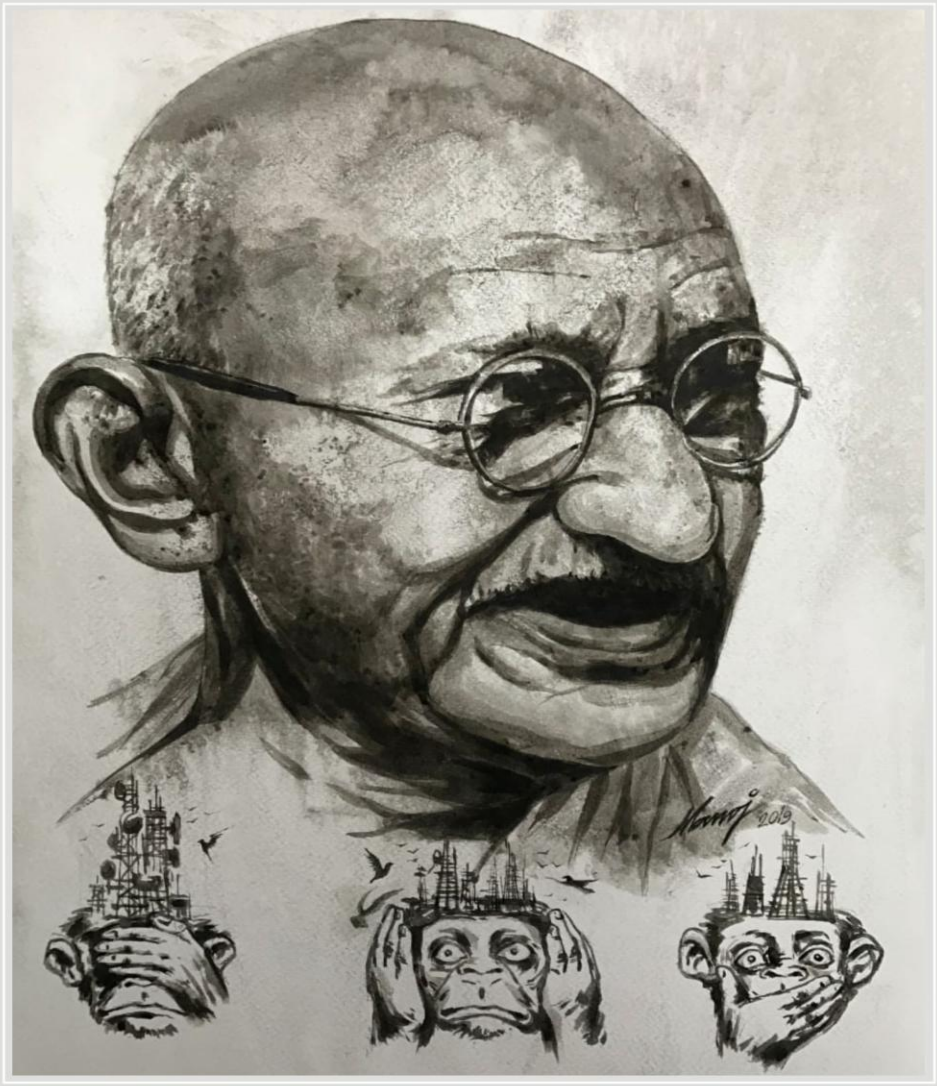

गाँधी आज

मूल्य ₹ बीस

सनातन गाँधी: *महात्मा इन मेकिंग* पर पुनर्विचार

अम्बिकादत्त शर्मा

मैं सिर्फ लोगों के अच्छे गुणों को देखता हूँ, ना की उनकी गलतियों को गिनता हूँ।

– महात्मा गाँधी

अहिंसक सत्यानेषी भारत की थाती *महात्मा गाँधी* को अनेकों नजरिये से देखने–समझने की कोशिश की गई है। उनका जीवन जबकि एक खुली किताब की तरह है। इतनी खुली किताब कि उनके जीवन को पब्लिक और प्रायवेट में विभाजित नहीं किया जा सकता। ऐसे पारदर्शी गाँधी को समझने–परखने का एक बड़ा ही प्रसिद्ध और प्रचलित तरीका *महात्मा इन मेकिंग* का है। इसका मतलब यह है कि उन्होंने उस मुकाम को धीरे–धीरे विकसित करते हुए प्राप्त किया है और तब जाकर दुनिया उन्हें महात्मा गाँधी के रूप में जान पायी। यह गाँधी के महात्मा बनने को एक आनुभविक ज्ञानमीमांसा की पद्धति से समझना है। डार्विन के विकासवाद और आधुनिक मनोविज्ञान की कसौटी पर एक व्यक्ति को समझने की कोई दूसरी पर्यवेक्षणीय ज्ञानमीमांसा हो भी नहीं सकती। परन्तु, एक साधारण व्यक्ति को जिस ज्ञानमीमांसा से समझा जाता है, उसी पद्धति से महात्मा के स्वत्व को भी क्या समझा जा सकता है? आज गाँधी का सम्पूर्ण जीवन दुनिया के सामने पूरी तरह अनावृत्त है। क्या उस जीवन–वृत में विन्यस्त व्यक्तित्व निर्माण की कोई ऐसी अभियांत्रिकी निकाली जा सकती है, जिसका विनियोग कर किसी व्यक्ति को महात्मा गाँधी बनाया जा सके। यदि ऐसा किया जाना सम्भव नहीं, तब *महात्मा इन मेकिंग* के तौर–तरीकों से गाँधी को समझने की यही सबसे बड़ी विफलता है। अत: आईये, *महात्मा इन मेकिंग* की ज्ञानमीमांसा पर पुनर्विचार करते हुए व्यक्तित्वान्तरित गाँधी को समझने का प्रयास करें।

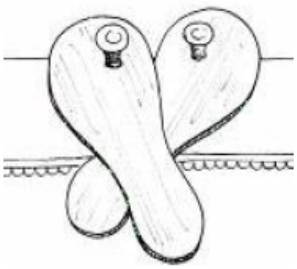

I

यदि हम विकासमान महात्मा गाँधी की इस अवधारणा को स्वीकार कर लेते हैं जो आधुनिक मनोविज्ञान की दृष्टि से व्यक्ति को समझने का सही तरीका है; तो हमें यह भी मानना पड़ेगा कि उनके विचारों में समय–समय पर बदलाव आया है। उन्होंने अपने दृष्टिकोणों में संशोधन और परिमार्जन किया है।